

## Fourteenth Loksabha

Session : 9  
Date : 24-11-2006

Participants : Rathod Shri Harisingh Nasaru

an>

Title: Reported suicide by farmers in Vidarbha region of Maharashtra.

श्री हरिभाऊ राठौड़ (यवतमाल): सभापति महोदया, जिन क्षेत्रों में किसान आत्महत्या कर रहे हैं उनमें मेरे लोक सभा क्षेत्र का यवतमाल सबसे आगे है। महाराष्ट्र में जो सरकार है, वह किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं को रोकने में पूरी तरह नाकाम रही है। प्रधान मंत्री जी यवतमाल आए थे और उन्होंने विदर्भ के पांच-छः जिलों के किसानों के लिए 3750 करोड़ रुपए स्पेशल पैकेज के रूप में दिए थे, लेकिन उसका केवल एनाउंसमेंट हुआ है। यह अभी तक कागज पर ही है। छः महीने बीत गए हैं, लेकिन अभी तक यह स्पेशल पैकेज किसानों तक नहीं पहुंचा है। इस बीच शरद पवार, कृषि मंत्री जी ने बताया था कि किसानों के लोन का जितना भी ब्याज है उसे हम भर देंगे और जो मूलधन है, उसकी हम पांच इंस्टालमेंट करेंगे और उसे देने में दो साल की छूट रहेगी। दो साल का पीरियड रखा था।

सभापति महोदया : आप थोड़े और स्पष्ट शब्दों में बताएं कि आपकी मांग क्या है?

श्री हरिभाऊ राठौड़ : महोदया, हुआ यह कि बैंकों ने किसानों को नया लोन देते समय, जो उनका पुराना आउटस्टैंडिंग लोन था, वह फिर से रिकवर कर लिया। मतलब यह हुआ कि पैकेज किसान को नहीं दिया, बल्कि बैंकों को मिला। उनका जो डूबा हुआ पैसा था, वह वसूल हो गया।

सभापति महोदया : अब क्या चाहिए?

श्री हरिभाऊ राठौड़ : महोदया, मैं यह चाहता हूँ कि सरकार ने जो छूट किसानों की दी थी, और बैंकों ने गलती से पुराना लोन किसानों से रिकवर कर लिया गया है वह किसानों को वापस मिलना चाहिए।

महोदया, इसी सिलसिले में, आज जन्तर-मन्तर पर यवतमाल के किसान अर्धनग्न अवस्था में अनशन पर बैठे हैं। मैंने माननीय प्रधान मंत्री को भी स्पष्ट रूप से एक पत्र लिखा था जिसमें उल्लेख किया था कि आपका जो पैकेज है, वह किसानों तक नहीं पहुंचा।

आज किसानों द्वारा आत्महत्या किया जाना आम बात हो गई है। हम रोजाना अखबारों में किसानों द्वारा आत्महत्या किए जाने के समाचार पढ़ते हैं, लेकिन सरकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। हम एक कान से सुनते हैं और दूसरे कान से निकाल देते हैं। किसानों की समस्याओं के प्रति देश में और सरकार में कोई जागरुकता देखने को नहीं मिलती है। सरकार किसानों द्वारा आत्महत्या किए जाने के कारणों की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दे रही है। सरकार किसानों द्वारा आत्महत्या किए जाने को रोकने में पूरी तरह नाकाम रही है। आपके माध्यम से मेरी मांग है कि एक बार इसकी पूरी तरह से सही-सही जांच हो कि किसान आत्महत्या क्यों कर रहे हैं? भला कोई आत्महत्या क्यों करेगा?

सभापति महोदया : आपकी मांग जांच करने की है? [r70]

श्री हरिभाऊ राठौड़ : मेरी मांग केवल जांच करने की नहीं है। जो पैसा था, जो रिकवरी थी, वह उन्होंने फार्म भरवाकर गरीब किसानों से ले ली है। एक तरफ तो 60 हजार रुपये दे दिया... (व्यवधान) मैडम, मैं एग्जाम्पल देता हूँ कि यह कैसे हुआ है। अभी जो नया लोन सरकार ने दिया था... (व्यवधान)

सभापति महोदया : आप अपनी बात कहिये।

श्री हरिभाऊ राठौड़ : मैं अपनी बात रखना चाहता हूँ, अपनी बात स्पष्ट करना चाहता हूँ। किसानों को 60 हजार रुपये लोन का एमाउण्ट उन्होंने सैंक्शन किया, लेकिन पुराना लोन अगर 25 हजार रुपये है तो उसमें एडजस्ट करके 35 हजार रुपये उनके हाथ में दिये। यह नहीं होना चाहिए था, उनको जो 60 हजार रुपये लोन सैंक्शन हुआ था, वह पूरा उनको देना चाहिए था और जो आउटस्टैंडिंग 35 हजार रुपये थे, उसकी पांच इंस्टालमेंट्स करनी चाहिए थीं। यह नहीं हुआ है, यह होना चाहिए, यही मेरी मांग है।

MADAM CHAIRMAN : The House stands adjourned to meet on Monday, the 27<sup>th</sup> of November 2006, at 11 a.m.

**18.55 hrs.**

*The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday,  
November 27, 2006/Agrahayana 6, 1928 (Saka).*

-----